अभ्यास पत्रक

पाठ – दुःख का अधिकार

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. गद्यांश पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"बुढ़िया खरबूजे बेचने का साहस करके आई थी, परंतु सिर पर चादर लपेटे, सिर को घुटनों पर टिकाए हुए फफक-फफक कर रो रही थी।"

1. बुढ़िया किस परिस्थिति में खरबूजे बेचने आई थी?

उत्तर - .....

2. वह खुले आम क्यों नहीं रो पा रही थी?

उत्तर - .....

3. समाज ने उसके इस व्यवहार को कैसे देखा?

उत्तर - .....

2. कथन और कारण पर आधारित प्रश्न (Assertion-Reason) – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** लेखक उस औरत के दुःख से विचलित था।
   कारण: लेखक ने उसकी पीड़ा को समझने की कोशिश की, परंतु उसकी पोशाक बाधा बन गई।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** समाज गरीब वर्ग के दुःख को भी उतनी ही संवेदनशीलता से देखता है जितना अमीर वर्ग के दुःख को।
   कारण: समाज आर्थिक स्थिति से परे सभी के प्रति समान सहानुभूति रखता है।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: गलत

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (5x1=5 अंक)

6. बुढ़िया का बेटा कैसे मरा?

उत्तर - .....
.....

7. लोग उसके खरबूजे क्यों नहीं खरीद पा रहे थे?

उत्तर - .....
.....

8. 'सूतक' से क्या तात्पर्य है?

उत्तर - .....
.....

9. बुढ़िया के घर की आर्थिक स्थिति कैसी थी?

उत्तर - .....
.....

eGyanArchive

10. लेखक ने किस संभ्रांत महिला की तुलना बुढ़िया से की?

उत्तर - .....

.....

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. लेखक की 'पोशाक' उसके कर्तव्य के मार्ग में कैसे बाधा बनी?

उत्तर - .....

.....

.....

12. समाज के लोगों ने उस औरत की स्थिति पर किस प्रकार की टिप्पणी की?

उत्तर - .....

.....

.....

13. लेखक की मनःस्थिति उस औरत के दुख को देखकर कैसी हो गई?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. लेखक ने 'दुःख' को भी एक 'अधिकार' क्यों कहा है? पाठ के संदर्भ में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "सामाजिक संवेदनशीलता और वर्गभेद" – इस विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

eyanarchive

उत्तर कुंजी

1. उसका बेटा सांप के काटने से मर गया था, और उसे घर चलाने के लिए फिर से बाजार आना पड़ा।
2. क्योंकि समाज उसकी परिस्थिति को गलत नजर से देख रहा था।
3. समाज ने उसे बेहया और धर्महीन कहा।
4. (क)
5. (घ)
6. गीली मेड़ पर साँप के डँसने से।
7. क्योंकि लोगों को लगा कि वह सूतक में है और खरबूजे खाने से उनका धर्म नष्ट होगा।
8. मृत्यु के बाद शोक के दिनों की धार्मिक मान्यता।
9. अत्यंत गरीब – घर में भोजन तक नहीं बचा था।
10. अपने पड़ोस की एक संभ्रांत महिला से जो पुत्र वियोग में महीनों बिस्तर पर रहीं।
11. लेखक का पहनावा समाज में ऊँचे दर्जे का प्रतीक था, जिससे वह उस स्त्री के पास जाकर सहानुभूति प्रकट नहीं कर पाया।
12. लोगों ने उसे असंवेदनशील, लोभी और धर्महीन कहा, उसकी विवशता को नहीं समझा।
13. लेखक बेचैन हो गया, उसकी चाल तेज़ हो गई और वह मन ही मन उस महिला के दुःख से टूट गया।
14.

लेखक ने 'दुःख का अधिकार' इसलिए कहा क्योंकि समाज में हर किसी को समान रूप से शोक व्यक्त करने की स्वतंत्रता नहीं होती। अमीरों को समाज दुःख मनाने की सहूलियत देता है – डॉक्टर, दवाई, शोक सभा आदि – जबकि गरीबों को अपने दुःख को भी दबाकर पेट पालने के लिए काम पर जाना पड़ता है। उस माँ के पास कोई साधन नहीं था, इसलिए उसे अपने बेटे की मौत के अगले ही दिन बाजार आना पड़ा। वह खुलकर रो भी नहीं पा रही थी क्योंकि लोग उसे घृणा और अपमान से देख रहे थे। लेखक इस वर्गभेद पर गहरी चिंता जताते हुए कहता है कि दुखी होने का अधिकार भी समाज में असमानता के आधार पर बँट गया है।

15.

समाज में संवेदनशीलता का अभाव और वर्गभेद की जड़ें बहुत गहरी हैं। जब कोई अमीर व्यक्ति किसी दुःख से गुजरता है, तो समाज उसे सम्मान और सहानुभूति से देखता है, परंतु वही स्थिति जब किसी गरीब पर आती है, तो समाज उसे उपेक्षा, तिरस्कार और कटाक्ष से देखता है। 'दुःख का अधिकार' पाठ इस सच्चाई को अत्यंत मार्मिक ढंग से उजागर करता है। बुढ़िया माँ अपने जवान बेटे की मौत के बाद आर्थिक विवशता के चलते अगले ही दिन बाजार में बैठ जाती है। समाज न उसकी पीड़ा समझता है, न उसकी मजबूरी। उलटे, उसे बेहया, धर्मभ्रष्ट और नीच कहा जाता है। यह वर्गभेद समाज की उस असंवेदनशीलता को दर्शाता है, जहाँ गरीबों को दुःख मनाने का भी अधिकार नहीं दिया जाता। लेखक इस विसंगति को उजागर करते हुए हमें चेताता है कि जब तक हम हर वर्ग के व्यक्ति की भावना को समान रूप से नहीं समझेंगे, तब तक समाज सच्चे अर्थों में मानवीय नहीं बन सकता।